प्रात: क्लास 8-10-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चे अभी दूर देश के रहनेवाले फिर दूर देश के पैसेन्जर्स हो। हम आत्मायें हैं। और अभी बहुत दूर देश जाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो हम आत्मायें दूर देश के रहने वाली हैं। और दूर देश में रहने वाले बापको भी बुलाते हैं कि आकर के हमको भी वहां दूर देश में ले चलो। अभी दूर देश के रहने वाला बाप तुम बच्चों को वहां ले जाते हैं। तुम हो रूहानी पैसेन्जर्स। क्योंकि इस शरीर के साथ हो ना। रूह ही यात्रा करेगी। शरीर तो यहां ही छोड़ देना है बाकी आत्मा यात्रा करेगी। रूह कहां जावेगी। अपनी रूहानी दुनिया में। यह है जिसमानी दुनिया। वह है रूहानी दुनिया। बच्चों को बाप ने समझाया है अभी घर वापिस जाना है। जहां से पार्ट बजाने यहां आये हैं। यह पार्ट बजाने का बहुत बड़ा मण्डवा वा स्टेज है। स्टेज पर एक्ट कर पार्ट बजाते हैं फिर सभी को वापिस जाना है। नाटक पूरा होगा तो जावेंगे ना। अभी तुम यहां बैठे हो तुम्हारी बुद्धि योगबल और राजधानी में है। यह तो पक्का2 याद कर लो। क्योंकि यह योगायन है अन्त मत सो गति। अभी यहां तुम पढ़ रहे हो। जानते हो भगवान, शिव बाबा हमको पढ़ाते हैं। भगवान तो सिवाय इस पुरुषोत्तम संगम युग के कब पढ़ावेंगे नहीं। सारे 5000 वर्ष में निराकारी बाप एक ही बार आकर पढ़ाते हैं। यह तो तुम बच्चों को पक्का2 निश्चय है। पढ़ाई भी कितनी सहज है। अभी घर जाना है। उस घर से तो सभी का प्यार है। सारी दुनिया का प्यार है। मुक्तिधाम में जाना तो सभी चाहते हैं ना। परन्तु उसका भी अर्थ नहीं समझते हैं। बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि हैं ना। स्वच्छ बुद्धि औ तुच्छ बुद्धि का कान्ट्रास्ट अभी तुम समझते हो। मनुष्यों की बुद्धि इस समय कैसी बनी है। कितना फर्क है। तुम्हारी है स्वच्छ बुद्धि नम्बरवार पुरु0 अनुसार। सारे विश्व के आदि मध्य अन्त का नालेज है। तुम्हारे दिल में यह है कि हमको अब पुरुषार्थ करने से ना0 जरूर बनना है। यहां से तो पहले अपने घर जावेंगे ना। तो खुशी से जाना है। जैसे सतयुग में देवतायें खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। वैसे इस पुराने शरीर को भी खुशी से छोड़ना है। इन से तंग न होना है। क्योंकि यह तो बहुत ही बड़ा वैल्युएबुल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप से लाटरी मिलती है। जितना तुम बाप को याद करेंगे हम आत्मा उस बाप के सन्तान हैं। यह पुराना शरीर छोड़ना है, हम जब तक पवित्र न बनें हैं घर में जा न सकेंगे। बाप को याद करते रहेंगे तब ही इस योगबल से सभी पापों का बोझा उतरेगा। नहीं तो बहुत सजा खानी पड़ेगी। पवित्र तो जरूर बनना है। लौकिक सम्बन्ध में भी बच्चे कोई गंदा पतित काम करते हैं तो बाप गुस्से में आकर लाठी से भी मार देते हैं। क्योंकि बेकायदे पतित बनते हैं। भल पतित बनना है वह तो कायदा है एक रूप से ही पतित बने। दूसरा कोई से पतित बनना बेकायदे है। किसी साथ बेकायदे प्यार रखते हैं तो भी मां बाप को अच्छा नहीं लगता। यह बेहद का बाप फिर कहते हैं तुम बच्चों को तो यहां रहने का ही नहीं है। अभी तुमको जाना है नई दुनिया में। वहां विकारीपतित कोई होता ही नहीं। एक ही पतित-पावन बाप आकर ऐसा पावन बनाते हैं। अभी तुम्हारे सम्मुख बेहद का बाप है। दुनिया को यह कभी पता नहीं है। शिवरात्रि भी मनाते हैं। बाप खुद कहते हैं हमारा जन्म दिव्य और अलौकिक है। और कोई भी आत्मा मेरे समान शरीर ले आ नहीं सकती है। भल धर्म स्थापक जो आते हैं उनकी आत्मा भी प्रवेश करती है परन्तु वह तो बाप ही अलग है। हम तो आते ही हैं सभी को वापिस ले जाने लिये। वह तो ऊपर से उतरते हैं नीचे अपना पार्ट बजाने। हम तो सभी को ले जाते हैं। फिर बतलाते हैं तुम कैसे पहले2 नई दुनिया में उतरेंगे। उस सतयुग नई दुनिया में बगुला कोई नहीं होता। बाप तो आते ही हैं बगुलों के बीच में। फिर तुमको हंस बनाते हैं। बाप कहते हैं यह है सबसे नम्बरवन बगुला। जो ही नम्बरवन हंस बना हुआ था। तुम भी अभी हंस बने हो। मोती ही चुगते हो। सतयुग में तुमको यह रत्न नहीं मिलेंगे। यहां तुम यह ज्ञान रत्न चुग कर हंस बनते हो। बगुले से तुम हंस कैसे बनते हो यह बेहद समझाते हैं। बगुला क्या खाता है। मूर्ख जनावर। तुम भी बगुले थे ना। अभी तुमको हंस बनना है। देवताओं को हंस, असुरों को बगुला कहा जाता है। अभी तुम—

किचड़ा छुड़ाकर मोती चुगाते हो। तुमको ही पदमापदमभाग्यशाली कहते हैं। तुम्हारे पैर में छापा लगता है पदमों का। शिव को तो पांव ही नहीं हैं। जो पदम हो सके। वह तो तुमको पदमापदमभाग्यशाली बनाते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाने आया हूं। यह सभी बातें और अच्छी रीति समझने की हैं। मनुष्य यह तो समझते हैं ना स्वर्ग, पैराडाईज था। परन्तु कब था, फिर कैसे होगा वह पता न है। तुम अभी रोशनी में हो। वह सभी हैं अंधयारे में। यह ल०ना० विश्व के मालिककब, कैसे बनें यह भी किसको पतानहीं है। 5000वर्ष की बात है बाप बैठकर समझाते हैं। जैसे तुम आते हो पार्ट बजाने मैं भी आता हूं। मुझे भी तुम निमंत्रण देकर बुलाते हो हे बाबा हम पतितों को आकर पावन बनाओ। और किसको भी कब ऐसे नहीं कहेंगे। अपने धर्म स्थापक को भी ऐसे नहीं कहेंगे कि आकर सभी को पावन बनाओ। क्राईस्ट अथवा बुध को भी थोड़ेही पतित-पावन कहेंगे। नानक को भी गुरु नहीं नहीं कहेंगे। गुरु वह जो सदगति करे। वह तो आते हैं उनके पिछाड़ी सभी को नीचे ही उतरना है। यहां से वापिस जाने का रास्ता बताने वाला, सर्व की सदगति करने वाला अकाल मूर्त एक ही बाप है। वास्तव में सद्गुरु अक्षर राईट है। तुम सभी से राईट अक्षर फिर भी सिखा लोग बोलते हैं। बड़े2 आवाज़ से कहते हैं सदगुरु अकाल ... बड़े जोर से धून लगाते हैं। सद्गुरु अकाल मुर्त कहते हैं। मूर्त ही न हो तो वह फिर सद्गुरु कैसे बनेगा। सदगति कैसे देंगे। वह सदगुरु स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं। मैं तुम्हारे मिसल जन्म नहीं लेता हूं। और तो सभी शरीर धारी बैठ सुनाते हैं। तुमको अशरीरी रूहानी बाप बैठ समझाते हैं रात दिन का फर्क है। कोई भी जिसमानी गुरु को मानना नहीं है। हिन्दु स्त्री को कहते हैं तुम्हारा पति गुरु है वह भी रांग है। इस समय मनुष्य जो कुछ करते हैं रांग ही करते हैं। क्योंकि रावण के मत पर हैं ना। इसलिये कहा ही जाता है रावण सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय। हरेक में 5विकार मौजूद है। मनुष्य थोड़ेही समझते हैं कि अभी रावण राज्य हैं। यह सभी बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। डिटेल भी सारे बताते हैं। नहीं तो सारी दुनिया के चक्र का कैसे मालूम पड़े। यह चक्र कैसे फिरता है मालूम पड़ना चाहिए ना। यह भी तुम नहीं कहते हो बाबा समझाओ। आप ही बाप समझाते हैं। तुमको तो एक भी प्रश्न पूछने का नहीं रहता। भगवान तो बाप है, बाप का काम है सब कुछ आपेही सुनाना, आपेही सभी कुछ करना। बच्चों को स्कूल में बाप आपेही बिठाते हैं। नौकरी पर लगाते हैं। फिर उनको कहते हैं 40वर्ष बाद यह सभी छोड़ भगवान का भजन करना। वेद-शास्त्र आदि पढ़ना। पूजा करना। अभी तुम समझते हो आधा कल्प हम पुजारी बने फिर आधा कल्प के लिये पूज्य बनते हैं। पवित्र कैसे बनें उसके लिये कितना सहज समझाया जाता है। फिर भक्ति बिल्कुल छूट जाती है। क्योंकि भक्ति से ही दुर्गति होती है। उस तरफ तो ध्यानभी न जाना चाहिए। वह सब भक्ति कर रहे हैं। तुम ज्ञान ले रहे हो। वह रात में हैं तुम दिन में जाते हो अर्थात स्वर्ग में। गीता में भी लिखा हुआ है मन्मनाभव। यह अक्षर तो मशहुर है। गीता पढ़ने वाले समझ सकते हैं। बहुत सहज लिखा हुआ है। सारी आयु गीता पढ़ते आये हैं कुछ भी समझते नहीं थे। अभी वही गीता का भगवान बैठ सिखलाते हैं तो पतित से पावन बन जाते हैं। भक्ति मार्ग में तो गीता पढ़ते2, सुनते2 पढ़ाते2 पतित ही बनें। अभी हम सुनते हैं फिर औरों को सुनाते हैं। पावन बनते हैं। बाप के महावाक्य हैं ना। यह है वही सहज राजयोग। मनुष्य कितने अन्ध-श्रद्धा में डूबे हुये हैं। तुम्हारी तो बात ही नहीं सुनते। ड्रामा अनुसार उन्हों की भी जब तकदीर खुले। तब ही आ सकते हैं तुम्हारे पास। तुम्हारी जैसी तकदीर और कोई धर्म वालों का नहीं हैं। बाप ने समझाया है तुम्हारा देवी, देवता धर्म बहुत ही सुख देने वाला है। तुमभी समझते हो बाबा ठीक कहते हैं। शास्त्रों में वहां भी कंस जरासंधि रावण आदि बैठ दिखाये हैं। वहां के सुख का तो कोई को पता ही नहीं हैं। भल देवताओं को पूजते हैं परन्तु बुधि से कुछ भी नहीं बैठता। तुमको अभी बाप बैठसमझाते हैं। बच्चे मुझे याद करते रहो। ऐसे कब सुना? बाप बच्चों को कहे कि मुझे याद करो। लौकिक बाप कब ऐसे याद कराने का पुरुषार्थ कराते हैं

हैं क्या। यह बेहद का बाप ही बैठ समझाते हैं। तुम सारे विश्व के आदि मध्य अन्त को जानकर चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। पहले तुम जावेंगे घर। फिर आना है पार्टधारी बनकर। अभी किसको भी यह पता नहीं पड़ेगा कि यह नई आत्मा है या पुरानी आत्मा है। नई आत्मा का नामाचार जरूर होता है। अभी देखो कोई कोई का कितना नामाचार होता है। मनुष्य ढेर आ जाते हैं। बैठे बैठे अनायास ही आ जाते हैं तो वह प्रभाव पड़ता है। बाबा भी इसमें अनायास ही आये ना। वह भी नई आत्मा आती है तो पुरानों में प्रभाव पड़ता है। डाक्टर-टारियां निकलती जाती है तो उनकी महिमा होती है। किसको पता नहीं पड़ता कि इनका नामाचार क्यों है। नई आत्मा होने से उनमें कशिश होती है। अभी तो देखो कितने ढेर झूठे भगवान बन गये हैं। इसलिये गायन है सच्च की बेड़ी डूबती नहीं। तूफान तो बहुत आवेंगे। क्योंकि भगवान खेवैया है ना। बच्चे भी हिलते हैं, बोट को तूफान बहुत लगते हैं तो कई समझते हैं यह डूबी कि डूबी। परन्तु ऐसा तो हो न सके। यह है सत का संग। यहां ही तूफान जास्ती लगते हैं। और सतसंगों में ढेर जाते हैं परन्तु वहां कब तूफान आदि की बात ही नहीं। यहां तो अबलाओं पर कितनी अत्याचार होते हैं। परन्तु फिर भी स्थापना तो होनी ही है। बाप बैठ समझाते हैं हे आत्मायें तुम कितने जंगल के कांटे बन गये हो। दूसरे को भी कांटा लगाते हो। रेसपान्ड तो हर बात का मिलता है। वहां दुःख की छी छी बातें कोई होती ही नहीं। इसलिये उनको कहा ही जाता है स्वर्ग। मनुष्यस्वर्ग और नर्क करते हैं परन्तु समझते नहीं हैं। कहते हैं फलाना स्वर्ग गया। यह कहना भी वास्तव में रांग है। निराकारी दुनिया को कोई हैविन नहीं कहा जाता। वह तो है मुक्ति-मुक्तिधाम। यह फिर कह देते स्वर्ग में गया। अभी तुम समझते हो। वह मुक्तिधाम आत्माओं का रहने का घर है। जैसे यहां घर जैसे हैं।

भक्ति मार्ग में जो बहुत धनवान होते हैं तो कितने उच्च मंदिर आदि बनाते हैं। शिव का मंदिर देखो कैसा बनाया हुआ है। लक्ष्मी का भी मंदिर बनाते हैं तो भी सच्चे जेवर आदि कितने होते हैं। बहुत धनवान होते हैं ना। अभी तो झूठ हो गया है। तुम भी आगे कितने सच्चे जेवर आदि पहनते थे। अभी तो गवर्मेन्ट के डर से अच्छा दिपकर झूठा ही पहनते रहते हैं। वहां तो सच्च ही सच्च है। झूठा कुछ भी होता ही नहीं। यहां तो सच्चा होते भी छिपाव रखा देते। झूठ पहनते रहते हैं। दिन प्रति दिन सोना महंगा होता जाता है। वहां तो है ही स्वर्ग। तुमको सभी कुछ नया मिलेगा। नई दुनिया में सभी कुछ नया मिलता है ना। अकीचार धन था। अभी तो हरेक चीज़ को देखो कितना मूल्य हो गया है। अभी तुम बच्चों को तो मूलवतन से लेकर सभी राज़ पूरा समझाया जाता है। मूलवतन का राज़ बाप बिगर कौन समझावेंगे। तुमको भी फिर टीचर बनना है। गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो। कमल फूल समान पवित्र रह और को भी आप समान बनावेंगे तो फिर उच्च पद पाय सकते हो। यहां रहने वालों से भी वह उच्च पद पा सकते हैं। नम्बरवार तो है ही बाहर में रहते हुये भी विजय माला में पिराये जा सकते हैं। हफ्ते का कोर्स ले फिर भल विलायत में जाये वा कहां भी जाये सारी दुनिया को यह मैसेज मिलना है "बाप आये हैं।" सिर्फ कहते हैं मामेकम याद करो। वह बाप ही लिबरेटर, गाईड है। वहां तुम जावेंगे तो अखबारों में भी बहुत नाम हो जावेगा। दूसरों को भी यह बहुत सहज बात लगेगी। आत्मा और शरीर दो चीज़ हैं। आत्मा में ही मन बुधि है। शरीर तो जड़ है। पार्टधारी आत्मा बनती है। खुबी वाली चीज़ आत्मा है। तो अभी बाप को याद करना है। यहां रहने वाले इतना याद नहीं करते जितनाकि बाहर वाले करते हैं। जो बहुत याद करते हैं और आप समान बनाते रहते हैं, कांटों को फूल बनाते रहते हैं। तुम भी समझते हो हम कांटे थे। अभी बाप ने आर्डीनेन्स निकाला है काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे। परन्तु लिखने से कोई समझते थोड़े ही हैं। अभी बाप ने समझाया है। यह ज्ञान बहुत शान्ति का है। आवाज नहीं। कोई2 को समझानी बहुत जोर से होती है। परन्तु नहीं। बहुत धीरे से बैठ समझाना है। जैसे चूहा फुंक मारता है ना। तुम अभी वाणी से परे जाते हो। मूल बात पावन होने की है। पावन दुनिया और पतित दुनिया है ना। ओम